

धर्मकृत

सुभद्रा-सती-चतुष्पदिका

(अनुपाने ई.स. १२९० नी आसपास)

कनुभाई शेठ

प्रास्ताविक

प्राचीन – मध्यकालीन गुजराती साहित्यमां विकसेला अनेक काव्यप्रकारोंमां ‘चतुष्पदिका’ (चोपाई) पण एक नोंधपात्र प्रकार छे. चतुष्पदिका–चोपाई घणीवार ‘रास’ प्रकारना पर्याय तरीके पण उल्लेख पास्यो छे. नेमिनाथ चतुष्पदिका (ई.स. ? ए गुजराती साहित्यनी प्रथम चतुष्पदिका कृति छे. अत्र, ‘धर्म’ कविनी कृति ‘सुभद्रा सती चतुष्पदिका’ परिचय प्रकाशित करी छे.

प्रत परिचय अने संपादनपर्थक्ति

प्रस्तुत कृतिनुं संपादन प्राप्त एकमात्र प्रत परथी करवामां आव्युं छे. स्व. अगरचंद नाहटाना (पोथी क्रमांक २१८) संग्रहमां रहेली एक प्राचीन गुटका प्रकारनी हस्तप्रतमां ते पत्र क्रमांक १८८-१९१ पर प्रस्तुत कृति उत्तरेली छे. प्रतनो पाठ कायम राख्यो छे. क्वचित् सुधारो के वधारो () कौसमां मुक्यो छे.

काव्यना कर्ता : धर्ममुनि

प्रस्तुत कृतिना कर्ता धर्ममुनि होवानुं काव्यना अंते मळता उल्लेख परथी कही शकाय. ‘सुभद्र मंदिर पहुती जाव, सासू समूरुक हरखिड ताव, जिणवर धंमु करहु ए कविते, जिन-शासण हुइ पर जयवंतो ४०

धर्म रचेली अन्य बे कृतिओ ‘स्थूलभद्रास’^१ अने ‘जंबूस्वामिचरिय’^२ मळे छे. ते आ ज कविनी रचना होय तेम लागे छे. केम के आ त्रणे कृतिओ एक हस्तप्रतमां सचवायेली छे. जो के अत्र नोंधबुं घटे के आ कृतिनी भाषा एटली प्राचीन रही नथी.

जं फलु होइ गया गिरनारे, जं फलु दीन्हइ सोना भारे,
जं फलु लखि नवकारिहि, तं फलु सुभद्रा-चरिति सुणिहि

१.

१. प्राचीन गूर्जर काव्य संचय. संपा. ह. चु. भायाणी अने अगरचंद नाहटा.

२. प्राचीन गूर्जर काव्य संग्रह. संपा. सी. डो. दलाल

दियइ धणु छह दरिसण श्रवइ, सुभग महासइ लाखण कवइ,
पहिली सरसति जीभह लग, बंधु तणा तुहु दखउँ मागा.

२.

तासु पसाइ कवितु हुइ धणइ, भणइ चरितु सुभदा तणउ,
चंपा-नयरि कहउँ विचारो, सुभद-महासइ निवसइ नारे.

३.

धरम - काजि जसु हरखितु चीतो, भवियहुँ निसुणउ कउनिगवीतो ?
हाथ पाय पखालइ अंगो, तहिणा धरमह नाही भंगो.

४.

नेमिसरी-सी देहुरी जाइ, नीका कुसुमह पाढी भरइ,
जिणु आराहइ चोखइ र्मनि, एकवार सो भक्खइ अन्नु

५.

अंबिल निवो करइ उपवासु, तपु तपेइ सा बारह मासु,
श्रावकनी छइ उत्तम जाति, जइसी निम्मल पुन्निम-राति

६.

महेसरी घर परिणिय सा ए, पीहरवाटहं धरमु करे ए,
सासुय पभणइ संभलि वहुए, अवर धरमु तुदु छंडहि सहुए.

७.

अम्ह धरि देउ नारायण अन्ति, वहुडिय जाह म पारसनाथे,
सुभदा पभणइ बे कर जोडि, सुर आवहि तेतीसउ कोडि.

८.

संभलि सासु अक्खउ एहो, जिणवर समउ न अच्छइ देओ,
तेउ कोविहि सासू परजलई, जाणहु धित वइस करि ढलइ

९.

मणिहि माहि तिनि धरियउ रोसु, एहइ कोवि चढावि मु दोसु,
मुणिवरु एक संसारह भगगहु, अति धणु तापु तपला लगउ.

१०.

कठइ देह तसु मनि नवि ढलए, वीस विस्वा तसु संजम पलए,
पंचेन्द्रिय तिण मलियउ मानु, काया कष्टु किधउ अप्पाणु.

११.

रानिहि जाइवि कवसगु देइ, मासह पाखह सो पारेइ.

X X X X X X X X X X X X X X X X X X

१२.

वाउ वाइ तह कोरणु धणउ, मुणिवर अंगाहि पडियइ तिणउ,

सोनवि हत्थिहि देठउ करए, खरउ दुहेलउ आंखितहशूरए.

१३.

पूरिय अवधि चलिउ तहि ठाए, कवणह नयरिय विहरण जाए,

अवरि न गइयउ चंपा पइठउ, अंखहि झरंती सुभदा दीठउ.

१४.

सुभदा मणइ माह चिंतिती, आविउ मुणिवरु तह विहरंती,

बडिय भगति कीयउ विहरणउ, सुभदा अंखहि झडपिउ तिणउ

१५.

सासू हूती जीमत बैठी, तिणउ लिपंति सुभदा दीठी,

विकलपु वसियउ मन्नह मांहि, वहुडी रहिसिमपीहरि जाहि

१६.

सुभदा ए भणई संभलि माए, नीकरु वयणु कि सहणउ जाए.

कवणि काजि तुम्हि कीन्हउ रोसो, अम्हह काइ चढावि दोसो

१७.

वंदइ देव गुणइ नवकारा, नीरु गलंती जन्नि वेवारा,

महसइ महसइ कहइ न आए, पाच्छिय लोवणु देहुरि जाए.

१८.

अम्हि दीठउ तुम्हारउ चरिउ, धमियउ सोनउ फूकह हरिउ,

तउ महसइ निंदइ अप्पाणु, ता किवे पुहेविदि ऊगोइ भाणु.

१९.

सुभदा भणई जइ वरतइ धंमु, पाणिउ अनु अनेरइ जम्मु.

सुभदा भणई न पीहरि जाउं, महुरि चडाविउ एवडु नाउं.

२०.

सासू ससरासु न मिलेहो, भणइ महासइ मइं सु कहे हो,

खूणो भीतरि छइ लंघती, सासू नणदउला लजंती.

२१.

सुभदा हूया तिनि उपवास, गुण नवकारह लकळ सहस्र
सासणे देवति आईय जक्ख, अंचिकदेवी हुइय परतक्ख.

२२.

दूक्खहं रथणि छइ अधराति, सासणदिवि अनुसुभद्रावाति,
चउविह धम्मह हउं सकराई, महसइ चित म करिजहु काई
२३.

सासणदेवि भणिउ सतु तोलि, चंपा ढाकिसु चारिउ पउलि,
नरह नरिंद नाही पाडि, मझ दीन्ही को सकइ उघाडि.
२४.

सासणदेवि ति चडिय विमाणि, जाइ देवि आपणइ सुठाणि,
सुभद भणइ दीठु जंजालो, एकवार जइ उतरइ आलो.
२५.

प्रह विहसी जउ हूवउ रोलो, नयरि तणिय न उघडहि पउले,
ते नवि प्राणिहि पाढी सरहिं, आरडु भरेडु गाविड करवि.
२६.

सासणदेवि ति कहिउ विचारी, सूतु कंताविज कोइ कुमारी,
कूबह जलु चालणि काढिजे, तिनि पऊलि जाइवि छांटिजे.
२७.

गयउ बहावउ वेगिहि रायवाला रोविहिं चंपा माहिं,
पउलि न उघडहि हुयउ विहाणु, जे वेगि तोलिवि जोयउ पाणु.
२८.

तक्खणि नरवइ चडिउ तुखारे, महंता गुपतिय वात विचारे,
धूप कडछू पलेकरि धरिउंह, देवति दाणव पाढा करहू.
२९.

होवे दियते वेदि तेडावहू, मयरी माहइ होमू करावउ,
जव तिल धीपइ सरिस होमु, जाव न लगाहिं गयणिहि धूम.
३०.

तेखणि महंतउ लागउ भणउ, नाही पाडु को होमहं तणउं,
वुधिध अनेरी कीजइ काए, पडहु दीयाचहु नगरह माहे.
३१.

तेगि चाचरि वाजिड डागरउ, चंपा पउलि कु पाछी करउ
करउ कोइ अम्हारउ काजो, नरवइ भणड दिवउ अधराजो.

३२.

सुभदा जइ छीतउ डागरउ, नरवइ राजु धणेरउ करउ,
अवर देसि जले धंधोले, सील - प्रभावि उघाडीसु पउले.

३३.

धरि थकी सासू ककळरइ (?) विजउ पवाडउ सुभदा करइ,
अउगी आछु म बोलिसि माए, तुह वयणिहि महु हियइ दाहो.

३४.

सात-बरीसी तेडिय बाला, सूतु कंतावण लागी ताळा,
काचइ तारणि बांधी चालणी, सुभदा कूवा ऊपरि वूणी(?)

३५.

चाबणियह जउ पाणिउ धरेए, तिनि पउलि ऊघाडी करए,
लक्खणु कवितु न लंगी घडी, सुभदा सतहि पउलि उघडी.

३६.

तक्कडिणि राउ रळियातु भयउ, तिणि वेगिहि आणिउ हाथियउ,
गयवर ऊपरि ठवियउ पाउं, आपुणु पालउ चलियउ रउ.

३७.

सुभदा सती बोलइ तिहि ठाए, चउथी पउलि उघाडउ काए,
राउ चुलइ सुभदा संभलइ, अवर महासति तुह विन तोलइ.

३८.

मेघाडंबर धरियहि छत्ता, आगइ नायत जादिंति पत्ता,
करहि कल्याणु भाट नगारी, मूध तालु तसु सुभदा पडी (?)

३९.

मिलिय सुवासिणि मंगलु गायहि, धवल टिंता वकुया -जाहि
हृय उछव वगरी मउझारे, सुभदा पंहुती सीहदुवारे

४०.

सुभदा मंदिरि पहुती जाव, सासू ससरउ हराखिड ताव,
जिणवर धंमु करहु ए-कवित्ते, जिण-सासणु हुइ पर जयवत्ते.

४१.

रठहि गुणहि जे जिणहरि देहिं, ते निवइ संसारु तरेहि
सुभदा-सती-चरितु संभलहि सिध्धि मुक्खु लीलइ ने लहाहि.

४२.